विषय-सूची

सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका पीठिका १–६८

मगलाचरण, सामान्य प्रकरण १
प्रथमानुयोग पक्षपाती का निराकरण ५
चरणानुयोग पक्षपाती का निराकरण ६
द्रव्यानुयोग पक्षपाती का निराकरण ९
शब्दशास्त्र पक्षपाती का निराकरण ११
अर्थ पक्षपाती का निराकरण १२
काम भोगादि पक्षपाती का निराकरण १३
शास्त्राभ्यास की महिमा १५
जीवकाण्ड सबधी प्रकरण १७–३०
कर्मकाण्ड सबधी प्रकरण ३१–४०
अर्थसंदृष्टी प्रकरण ४६–४७
लब्धिसार, क्षपणासार सबधी प्रकरण ४८–५५
परिकर्माष्टक सबन्धी प्रकरण ५५–६८

मंगलाचरण व प्रतिज्ञा ६९–८६

भाषा टीकाकार का मगलाचरण ६९–७५
ग्रन्थकर्ता का मगलाचरण व प्रतिज्ञा ७५–८१
बीस प्ररूपणाओ के नाम व सामान्य कथन ८१–८६

पहला अधिकार .
गुणस्थान-प्ररूपणा ८६–१७९

गुणस्थान और तद् विषयक औदायिक भावो का कथन ८६–९१
मिथ्यात्व का स्वरूप ९१–९५
सासादन का स्वरूप ९५–९६
सम्यग्मिथ्यात्व का स्वरूप ९६–९८
असयत का स्वरूप ९८–१०३
देशसयत का स्वरूप १०३–१०४
प्रमत्त का स्वरूप १०४–१३२
अप्रमत्त का स्वरूप १३२–१५३
अपूर्वकरण का स्वरूप १५३–१५९
अनिवृत्तिकरण का स्वरूप १५९–१६०
सूक्ष्मसांपराय का स्वरूप १६०–१६७
उपशातकषाय का स्वरूप १६७–१६८
क्षीणकषाय का स्वरूप १६८
सयोगकेवली का स्वरूप १६८–१६९
अयोगकेवली का स्वरूप १६९–१७६
सिद्ध का स्वरूप १७६–१७९

दूसरा अधिकार :
जीवसमास-प्ररूपणा १८०–२३४

जीवसमास का लक्षण १८०–१८२
जीवसमास के भेद १८३–१९१
योनि अधिकार १९१–१९८
अवगाहना अधिकार १९८–२३४

तीसरा अधिकार :
पर्याप्ति-प्ररूपणा २३५–२७६

अलौकिक गणित २३५–२६८
दृष्टात द्वारा पर्याप्ति अपर्याप्ति का स्वरूप व भेद २६८–२७०
पर्याप्ति, निवृत्ति अपर्याप्ति का स्वरूप २७०–२७२
लब्धि अपर्याप्तक का स्वरूप २७२–२७६

चौथा अधिकार :
प्राण-प्ररूपणा २७७–२८०

प्राण का लक्षण, भेद, उत्पत्ति की सामग्री, स्वामी तथा एकेन्द्रियादि जीवो के प्राणो का नियम २७७–२८०

पांचवा अधिकार :
संज्ञा-प्ररूपणा २८१–२८३

सज्ञा का स्वरूप, भेद, आहारादि सज्ञा का स्वरूप तथा सज्ञाओ के स्वामी २८१–२८३

छठवां अधिकार :
गतिमार्गणा-प्ररूपणा २८४–३०८

मगलाचरण और मार्गणाधिकार के वर्णन की प्रतिज्ञा २८४
मार्गणा शब्द की निरुक्ति का लक्षण २८४

चौदह मार्गणाओं के नाम २८५
मातरमार्गणा, उसका स्वरूप व संख्या २८५–२९७
नारकादि गतिमार्गणा का स्वरूप २९७–३००
सिद्धगति का स्वरूप ३०१
नारकी जीवों की संख्या का कथन ३०२–३०८

सातवां अधिकार :
इन्द्रिय मार्गणा प्ररूपणा ३०९–३२१

मंगलाचरण, इन्द्रिय शब्द की निरुक्ति, इन्द्रिय के भेद ३०९–३१२
एकेन्द्रियादि जीवों की इन्द्रिय-संख्या उनका विषय तथा क्षेत्र ३१३–३१७
इन्द्रिय रहित जीवों का स्वरूप ३१८
एकेन्द्रियादि जीवों की संख्या ३१८–३२१

आठवां अधिकार :
कायमार्गणा-प्ररूपणा ३२२–३५२

मंगलाचरण, कायमार्गणा का स्वरूप व भेद ३२२
स्थावरकाय की उत्पत्ति का कारण ३२३
शरीर के भेद, लक्षण और संख्या ३२४–३२८
सप्रतिष्ठित, अप्रतिष्ठित जीवों का स्वरूप ३२८–३३०
साधारण वनस्पति का स्वरूप ३३०–३३७
त्रसकाय का प्ररूपण ३३७–३३८
वनस्पतिवत अन्य जीवों के प्रतिष्ठित तथा अप्रतिष्ठितपना ३३९
स्थावरकाय तथा त्रसकाय जीवों के शरीर का आकार ३३९–३४०
योनिरहित-सिद्धों का स्वरूप ३४१
पृथ्वीकायिक आदि जीवों की संख्या ३४१–३५१

नवमां अधिकार .
योगमार्गणा-प्ररूपणा ३५२–४०५

योग का सामान्य लक्षण, योग का विशेष लक्षण, योग विहीनों का लक्षण ३५२–३५५
दस प्रकार के सत्य का उदाहरण-पूर्वक कथन ३५६–३५९
मन-वचन-योग के भेदों का कारण ३६०
सयोग केवली को मनोयोग की संभावना ३६१–३६२
काययोग का स्वरूप व भेद ३६३–३७०
योग रहित आत्मा का स्वरूप ३७०–३७१
शरीर में कर्म नोकर्म का भेद ३७१
औदारिकादि शरीर के समयप्रबद्ध की संख्या ३७२–३७४
विस्रसोपचय का स्वरूप ३७५–३७६
औदारिक पांच शरीरों की उत्कृष्ट स्थिति ३७६–३८८
औदारिक समयप्रबद्ध का स्वरूप ३८८–३८९
औदारिकादि शरीर विषयक विशेष कथन ३८९–४००
योग मार्गणाओं में जीवों की संख्या ४०१–४०५

दसवां अधिकार :
वेदमार्गणा-प्ररूपणा ४०६–४१३

तीन वेद और उनके कारण व भेद ४०६–४०८
वेद रहित जीव ४०९–४१०
वेद की अपेक्षा जीवों की संख्या ४१०–४१३

ग्यारहवां अधिकार .
कषायमार्गणा प्ररूपणा ४१४–४३५

मंगलाचरण तथा कषाय के निरुक्तिसिद्ध लक्षण, शक्ति की अपेक्षा क्रोधादि के ४ भेद तथा दृष्टांत गतियों के प्रथम समय में क्रोधादि का नियम ४१४–४१९
कषाय रहित जीव ४१९–४२०
कषायों का स्थान ४२१–४३०
कषायस्थानों का यन्त्र, कषाय की अपेक्षा जीवसंख्या ४३०–४३५

बारहवां अधिकार :
ज्ञानमार्गणा-प्ररूपणा ४३६–५७१

ज्ञान का निरुक्तिसिद्ध सामान्य लक्षण, पांच ज्ञानों का क्षायोपशमिक क्षायिक-रूप से विभाग, मिथ्याज्ञान का कारण और स्वामी ४३६–४३८
मिथ्याज्ञान का कारण और मनःपर्यय-ज्ञान का स्वामी, दृष्टांत द्वारा तीन

मिथ्याज्ञान का स्वरूप, मतिज्ञान का स्वरूप, उत्पत्ति आदि ४३८–४५०
श्रुतज्ञान का सामान्य लक्षण, भेद ४५०–४५३
पर्यायज्ञान, पर्यायसमास, अक्षरात्मक श्रुतज्ञान ४५३–४८१
श्रुतनिबद्ध विषय का प्रमाण, अक्षर-समास, पदज्ञान, पद के अक्षरो का प्रमाण, प्रतिपत्तिक श्रुतज्ञान ४८१–४८४
अनेक प्रकार के श्रुतज्ञान का विस्तृत स्वरूप, अगबाह्य श्रुत के भेद, अक्षरो का प्रमाण, अगो व पूर्वो के पदो की सख्या, श्रुतज्ञान का माहात्म्य, अवधिज्ञान के भेद, ४८४–५२१
उसके स्वामी और स्वरूप, ५२१–५३६
अवधि का द्रव्यादि चतुष्टय की अपेक्षा वर्णन, अवधि का सबसे जघन्य द्रव्य ५३७–५५४
नरकादि मे अवधि का क्षेत्र ५५४–५६०
मनःपर्ययज्ञान का स्वरूप, भेद, स्वामी और उसका द्रव्य ५६०–५६८
केवलज्ञान का स्वरूप, ज्ञानमार्गणा मे जीवसख्या ५६८–५७१

तेरहवां अधिकार : संयममार्गणा-प्ररूपणा ५७२–५८०

सयम का स्वरूप और उसके पांच भेद, सयम की उत्पत्ति का कारण ५७२–५७४
देश संयम और असयम का कारण, सामायिकादि ५ सयम का स्वरूप ५७४–५७७
देशविरत, इन्द्रियो के अट्ठाईस विषय, सयम की अपेक्षा जीवसख्या ५७७–५८०

चौदहवां अधिकार : दर्शनमार्गणा-प्ररूपणा ५८१–५८४

दर्शन का लक्षण, चक्षुदर्शन आदि ४ भेदो को क्रम से स्वरूप, दर्शन की अपेक्षा जीव सख्या ५८१–५८४

पंद्रहवां अधिकार : लेश्यामार्गणा-प्ररूपणा ५८५–६४४

लेश्या का लक्षण, लेश्याओ के निर्देश आदि १६ अधिकार ५८५–५८६
निर्देश, वर्ण, परिणाम, सक्रम, कर्म, लक्षण, गति, स्वामी, साधन, अपेक्षा लेश्या का कथन ५८६–६१०
सख्या, क्षेत्र, स्पर्श, काल, अन्तर, भाव और अल्पबहुत्व अपेक्षा लेश्या का कथन ६१०–६४३
लेश्या रहित जीव ६४३–६४४

सोलहवां अधिकार : भव्यमार्गणा-प्ररूपणा ६४५–६५७

भव्य, अभव्य का स्वरूप, भव्यत्व अभव्यत्व से रहित जीव, भव्य मार्गणा मे जीवसख्या ६४५–६४६
पाँच परिवर्तन ६४६–६५७

सतरहवां अधिकार : सम्यक्त्वमार्गणा-प्ररूपणा ६५८–७२३

सम्यक्त्व का स्वरूप, सात अधिकारो के द्वारा छह द्रव्यो के निरूपण का निर्देश ६५८–६५९
नाम, उपलक्षण, स्थिति, क्षेत्र, सख्या, स्थानस्वरूप, फलाधिकार द्वारा छह द्रव्यो का निरूपण ६५९–७०१
पचास्तिकाय, नवपदार्थ, गुणस्थान क्रम से जीवसख्या, त्रैराशिक यन्त्र ७०२–७०७
क्षपकादि की युगपत् सम्भव विशेष सख्या, सर्व सयमियो की सख्या, क्षायिक सम्यक्त्व, वेदक सम्यक्त्व, उपशम सम्यक्त्व ७०८–७१९
पांच लब्धि, सम्यक्त्व ग्रहण के योग्य जीव, सम्यक्त्वमार्गणा के दूसरे भेद, सम्यक्त्वमार्गणा मे जीवसंख्या ७१९–७२३

अठारहवां अधिकार : संज्ञीमार्गणा-प्ररूपणा ७२४–७२५

संज्ञी, असज्ञी का स्वरूप, सज्ञी असज्ञी की परीक्षा के चिन्ह ७२४
सज्ञी मार्गणा मे जीवसख्या ७२५

उन्नीसवां अधिकार :
आहारमार्गणा-प्ररूपणा ७२६–७३९

आहार का स्वरूप, आहारक अनाहारक भेद, समुद्घात के भेद, समुद्घात का स्वरूप ७२६–७२७

आहारक और अनाहारक का काल प्रमाण, आहारमार्गणा मे जीवसख्या ७२८–७२९

वीसवां अधिकार :
उपयोग-प्ररूपणा ७३०–७३२

उपयोग का स्वरूप, भेद तथा उत्तर भेद, साकार अनाकार उपयोग की विशेषता उपयोगाधिकार मे जीवसंख्या ७३०–७३२

इक्कीसवां अधिकार :
अन्तर्भावाधिकार ७३३-७५०

गुणस्थान और मार्गणा में शेष प्ररूपणाओ का अन्तर्भाव, मार्गणाओ मे जीवसमासादि ७३३–७४१

गुणस्थानो मे जीवसमासादि मार्गणाओ मे जीवसमास ७४१–७५०

बाईसवां अधिकार :
आलापाधिकार ७५१–८५८

नमस्कार और आलापाधिकार के कहने की प्रतिज्ञा ७५१

गुणस्थान और मार्गणाओ के आलापो की सख्या, गुणस्थानों में आलाप, जीवसमास की विशेषता, वीस भेदो की योजना, आवश्यक नियम ७५१–७६६

यत्र रचना ७६७–८५५

गुणस्थानातीत सिद्धो का स्वरूप, वीस भेदो के जानने का उपाय, अन्तिम आशीर्वाद, ८५५–८५८

—o—

विषयजनित जो सुख है वह दुख ही है क्योकि विषय-सुख परनिमित्त से होता है, पूर्व और पश्चात् तुरन्त ही आकुलता सहित है और जिसके नाश होने के अनेक कारण मिलते ही हैं, आगामी नरकादि दुर्गगति प्राप्त करानेवाला है··· ऐसा होने पर भी वह तेरी चाह अनुसार मिलता ही नही, पूर्व पुण्य से होता है, इसलिए विषम है। जैसे खाज से पीडित पुरुष अपने अंग को कठोर वस्तु से खुजाते हैं वैसे ही इन्द्रियो से पीड़ित जीव उनको पीडा सही न जाय तब किंचितमात्र जिनमें पीडा का प्रतिकार सा भासे ऐसे जो विषयसुख उनमे झपापात करते हैं, वह परमार्थ रूप सुख नहीं, और शास्त्राभ्यास करने से जो सम्यग्ज्ञान हुआ उससे उत्पन्न आनन्द, वह सच्चा सुख है। जिससे वह सुख स्वाधीन है, आकुलता रहित है, किसी द्वारा नष्ट नही होता, मोक्ष का कारण है, विषम नही है। जिस प्रकार खाज की पीडा नही होती तो सहज ही सुखी होता, उसी प्रकार वहाँ इन्द्रिय पीड़ने के लिए समर्थ नही होती तब सहज ही सुख को प्राप्त होता है। इसलिए विषयसुख को छोड़कर शास्त्राभ्यास करना, यदि सर्वथा न छुटे तो जितना हो सके उतना छोड़कर शास्त्राभ्यास मे तत्पर रहना।

इसी ग्रन्थ से अनुदित, पृष्ठ – १३ व १४